



और मगर

लेखिका — उषा शर्मा
चित्रांकन — शुभम लखेरा

प्रथम संस्करण

जनवरी 2025 पौष 1946

PD 5T M

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2025

₹ 35.00

एन.सी.ई.आर.टी. वॉटरमार्क 100 जी.एस.एम. आर्ट पेपर पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग,
नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशित तथा बी.एम. ऑफ़सेट
प्रिंटर्स, एच-37, सेक्टर-63, नोएडा, उ.प्र.-201301 द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैपस, श्री अरविंद मार्ग नई दिल्ली 110 016	फ़ोन : 011-26562708
108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्टेकेरे, बनाशांकरा III इस्टेज, बेंगलुरु 560 085	फ़ोन : 080-26725740
नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन, अहमदाबाद 380 014	फ़ोन : 079-27541446
सी.डब्ल्यू.सी. कैपस, निकट धनकल बस स्टॉप पिनहटी कोलकाता 700 114	फ़ोन : 033-25530454
सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, मालीगाँव गुवाहाटी 781021	फ़ोन : 0361-2676869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	: एम. वी. श्रीनिवासन
मुख्य संपादक	: बिज्ञान सुतार
मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी)	: जहान लाल
मुख्य व्यापार प्रबंधक	: अमिताभ कुमार
सहायक संपादक	: मीनाक्षी
उत्पादन अधिकारी	: सुनील शर्मा

आवरण एवं चित्रांकन

शुभम लखेरा

ले आउट

डिजिटल एक्सप्रेस

सहयोग हेतु आभार ज्ञापन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) रचनाकारों, उनके परिजनों, संस्थानों या प्रकाशकों के प्रति आभारी है, जिन्होंने अपनी रचनाओं को प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान की।

परिषद्, रचनाकार, चित्रांकनकर्ता, एकलव्य, एकतारा संस्थाओं, अंजलि तिवारी, वेलफेयर अधिकारी, समाज कल्याण विभाग, दिल्ली; अयाज अहमद, डी.टी.पी. ऑपरेटर, सीआईईटी, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; किरण, पूर्व जेपीएफ़, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; मोहम्मद आतिर, पूर्व ग्राफ़िक डिज़ाइनर, सीएनसीएल, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; योगेश प्रताप सिंह वर्मा, डी.टी.पी. ऑपरेटर, सीएनसीएल, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; सीमा शर्मा, पूर्व वरिष्ठ परामर्शदाता, प्रारंभिक शिक्षा, विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; के प्रति भी आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, पुस्तक को वर्तमान स्वरूप प्रदान करने हेतु प्रकाशन प्रभाग के सदस्यों पारुल त्यागी और शिव मोहन यादव, सहायक संपादक (संविदा); सुनेन्द्र कुमार, प्रभारी, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ; मोहन सिंह, डी.टी.पी. ऑपरेटर (संविदा); के प्रति भी आभार व्यक्त करती है।

समीक्षा हेतु आभार ज्ञापन

अक्षय कुमार दीक्षित, मेंटर, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली; नीरा नारांग, आचार्य, शिक्षा संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; प्राची कालरा, सहायक आचार्य, गार्गी कॉलेज, नई दिल्ली; मालविका राय, शिक्षाविद्, नई दिल्ली; मुकुल प्रियदर्शिनी, सह-आचार्य (सेवानिवृत्त),

मिरांडा हाउस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; वर्षा सिंघल, शिक्षिका, केंद्रीय विद्यालय, कोकराझार, असम; श्वेता उप्पल, पूर्व मुख्य संपादक, प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; संध्या सिंह, आचार्य, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; सोनिका कौशिक, सहायक आचार्य, जीसस एंड मैरी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; स्नेहा सबनिस, अनुवादक, राजभाषा संचालनालय, गोवा सरकार।

कहानियाँ बच्चों को पढ़ने का आनंद देती हैं और साथ ही कुशल बुद्धि, समस्या समाधान एवं तार्किक विश्लेषण की क्षमता का संवर्धन भी करती हैं। फाउंडेशनल और प्रीप्रेटरी स्टेज के बच्चों एवं शिक्षकों के लिए कहानियाँ भाषायी कौशल एवं आस-पास मौजूद विभिन्न अवधारणाओं को सीखने में भी सहायता करेंगी। कहानियों में आए चित्र बच्चों को अनुमान लगाकर पढ़ने और उन्हें अपने अनुभव संसार से जोड़ते हुए अपनी बात कहने का अवसर तथा आत्मविश्वास भी देते हैं। किसी कहानी का कोई पात्र या घटना बच्चों के जीवन एवं चिंतन को प्रभावित भी कर सकता है और बच्चे उनके साथ तादात्म्य भी स्थापित कर सकते हैं। पढ़ी गई कहानी को अपनी कल्पना के आधार पर आगे बढ़ाने, अपनी कहानी स्वयं रचने का अवसर भी उपलब्ध होगा। कहानियाँ बच्चों को स्वतंत्र पाठक और सृजनशील लेखक बनने में सहायता करेंगी।

उषा शर्मा

आचार्य एवं कार्यक्रम समन्वयक
प्रारंभिक शिक्षा विभाग,
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली



मगरमच्छ को क्या चाहिए था? मीनू या मटका?
हम सबका दिमाग यहीं अटका...

लेखिका — उषा शर्मा
चित्रांकन — शुभम लखेरा



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

गर्मी के दिन थे। मीनू के घर में पानी नहीं था। माँ ने मीनू को तालाब से पानी लाने के लिए कहा।





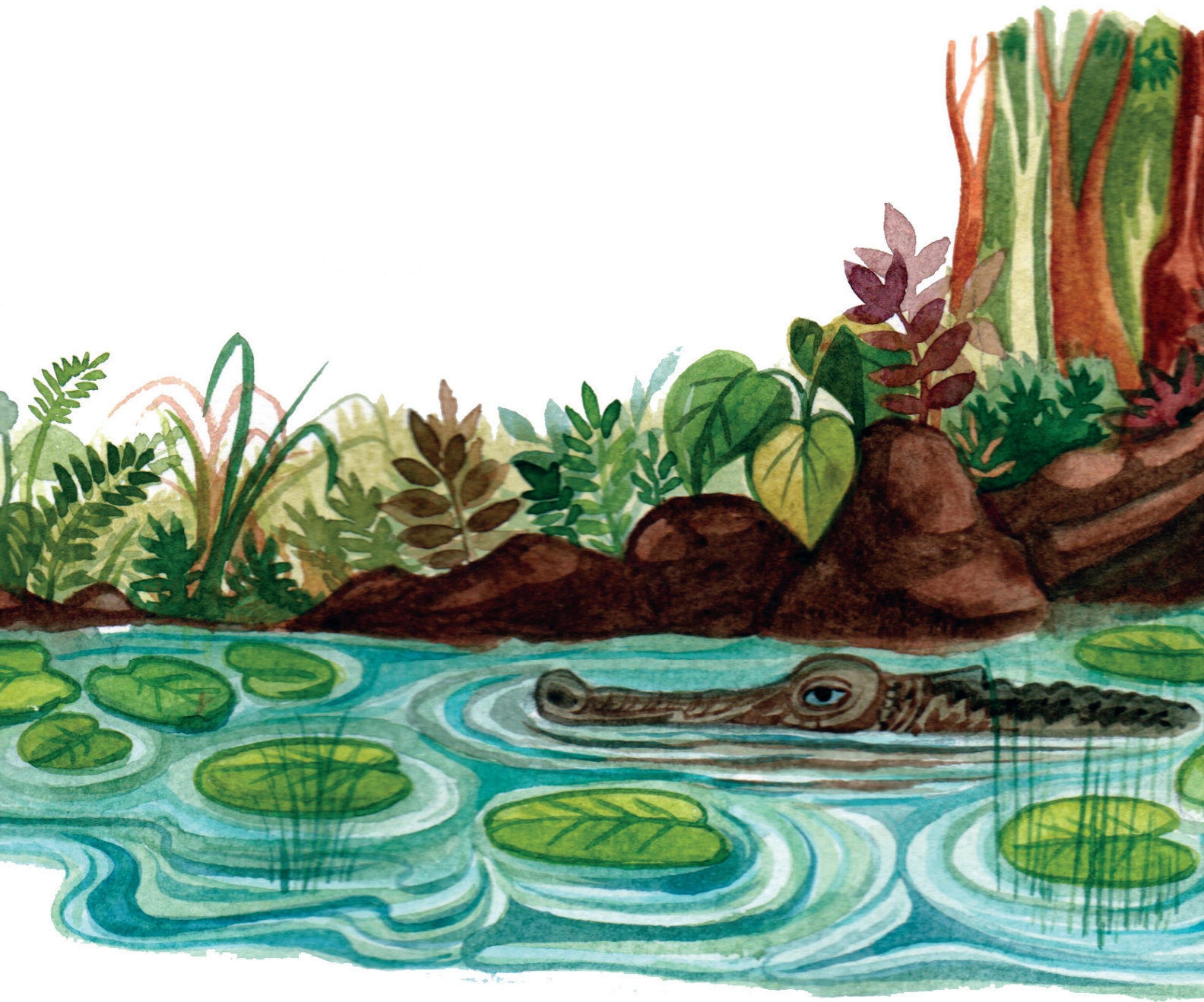
तालाब जंगल के उस पार था। मीनू ने पीतल
का मटका उठाया और गीत गाते हुए पानी
भरने चल दी।





उस तालाब में बड़े-बड़े मगरमच्छ रहते थे!





मीनू तालाब के किनारे पहुँच गई और उसने
अभी मटके को पानी में डाला ही था कि ...





‘झटाक’ की आवाज़ आई! यह क्या? एक बड़े से मगरमच्छ ने मटका अपने जबड़े में दबा लिया था!





मीनू जल्दी से पीछे हट गई! लेकिन मीनू ने हिम्मत बटोरी! उसे पानी घर लेकर ही जाना था! उसे पास की झाड़ियों में एक मोटी-सी डंडी नज़र आई।



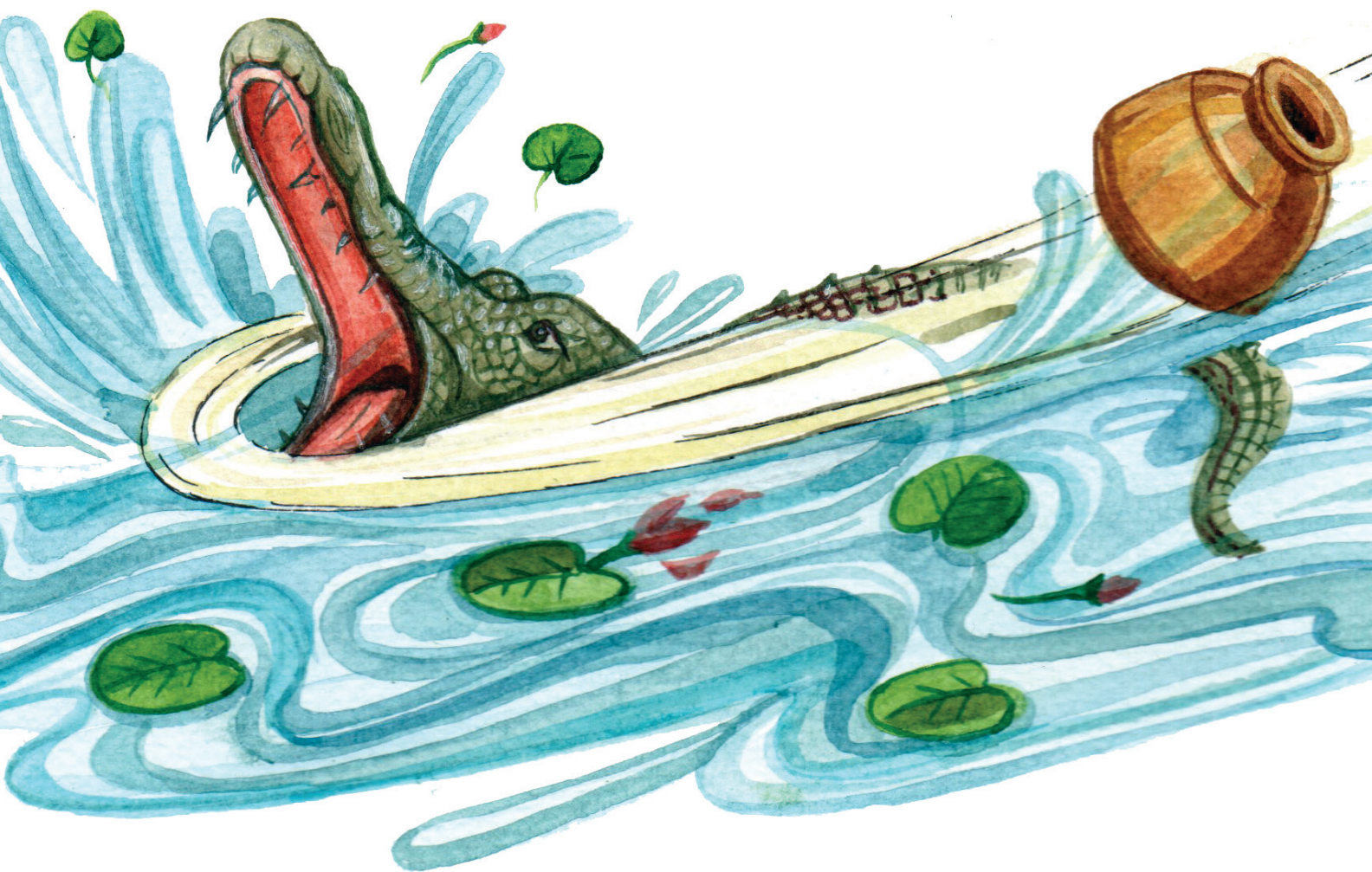
वह डंडी लेकर वापस तालाब के पास पहुँची! उसने डंडी को ज़ोर से मगरमच्छ के मुँह की तरफ फेंका! मगरमच्छ ने डंडी को लपकने के लिए अपना मुँह और बड़ा किया ही था कि ...





अटका हुआ मटका उसके मुँह से
छूट गया!





मटका पास की झाड़ियों में जा गिरा!



मीनू ने मटके में पानी भरा और वापस चल
दी घर की ओर!





लेखिका

उषा शर्मा



आचार्य उषा शर्मा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) के राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ की प्रभारी हैं और प्रारंभिक शिक्षा विभाग में भी कार्यरत हैं। कक्षा एक की शिक्षिका के रूप में अपने वृत्तिक जीवन का प्रारंभ करने वाली आचार्य उषा शर्मा पिछले 31 वर्षों (तीन दशकों) से बच्चों की शिक्षा के लिए काम कर रही हैं। वे प्रारंभिक स्तर पर भाषा-शिक्षा, पढ़ना-लिखना, बाल साहित्य, प्रौढ़ शिक्षा आदि विषयों की विशेषज्ञ हैं। राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक निर्माण कार्य के साथ-साथ बच्चों, शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों एवं अभिभावकों के लिए विभिन्न प्रकार की संसाधन सामग्री (प्रिंट एवं ऑडियो-वीडियो) के निर्माण में उषा शर्मा की महत्वपूर्ण भागीदारी रही है। उषा शर्मा रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित बाल पत्रिका *फिरकी बच्चों की* एवं शोध पत्रिका *प्राथमिक शिक्षक* की अकादमिक संपादक हैं।

चित्रांकन

शुभम लखेरा

मध्य प्रदेश के शहर चंदेरी में रहने वाले शुभम लखेरा गवर्नमेंट फाइन आर्ट कॉलेज, ग्वालियर से ललित कला में स्नातक (बीएफए) हैं। इन्होंने बाल साहित्य चित्रांकन में रियाज अकादमी (भोपाल) से प्रशिक्षण लिया है। शुभम पिछले पाँच वर्षों से बाल साहित्य के क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं। विभिन्न बाल पत्रिकाओं जैसे— *चकमक*, *प्लूटो*, *साइकिल*, *फिरकी बच्चों की* आदि के लिए भी काम करते रहे हैं। शुभम ने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा. शै.अ.प्र.प.), डकबिल, तुलिका, रूम टू रीड, नवनीत बुक्स, एकलव्य जैसे प्रकाशकों के लिए चित्रांकन किया है। शुभम की पुस्तक *मुझे समझ नहीं आया* को 2019 में एफआईसीसीआई द्वारा पुरस्कृत किया गया।



1. कुछ हम कहें, कुछ तुम कहो!

क. तालाब में बड़े-बड़े मगरमच्छ रहते थे।

- तालाब में और कौन-कौन से जीव-जंतु रहते होंगे?
- तालाब के आस-पास कौन-कौन से जीव-जंतु रहते होंगे?
- अपने आस-पास तालाब देखकर बताइए कि वहाँ और क्या-क्या होता होगा?

ख. मीनू ने बुद्धि से काम लिया और मगरमच्छ को भगा दिया।

- आप मगरमच्छ को कैसे भगाते?
- मगरमच्छ को भगाने का कोई एक और तरीका बताइए।

2. अनुमान और कल्पना

- अगर तालाब में दो मगरमच्छ होते तो मीनू क्या करती?
- मटका किस चीज़ का बना था? यह कैसे पता चला?
- मगरमच्छ का कितना वजन होता होगा?

3. मेरी कहानी!

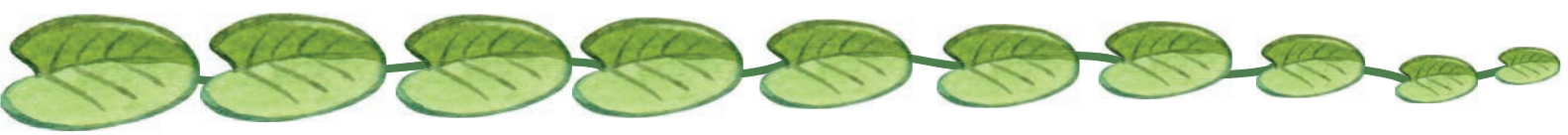
क. मीनू ने अपनी माँ को यह घटना कैसे सुनाई होगी?

ख. आप यह कहानी अपने घर में, दोस्तों को कैसे सुनाएँगे? अपनी भाषा में सुनाइए!

4. शब्दों की दुनिया

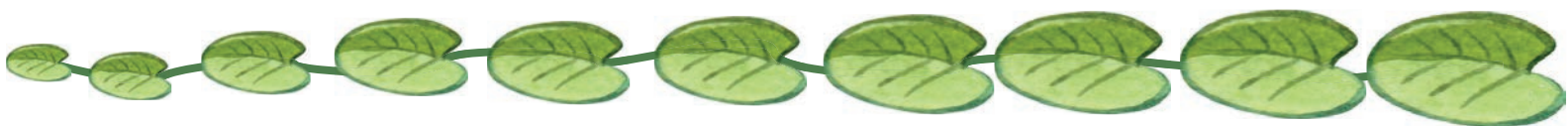
नीचे दिए गए अक्षर जाल की मदद से शब्द बनाइए—

क	छु	आ	म	छि
सा	र	स	ग	प
अ	ज	ग	र	क
साँ	स	र	म	ली
प	दा	म	च्छ	र

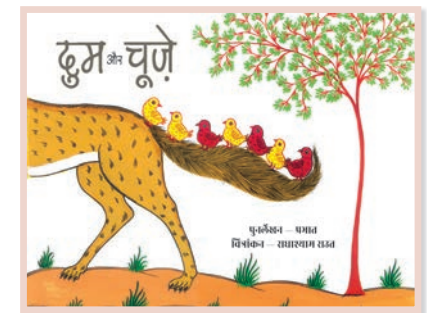
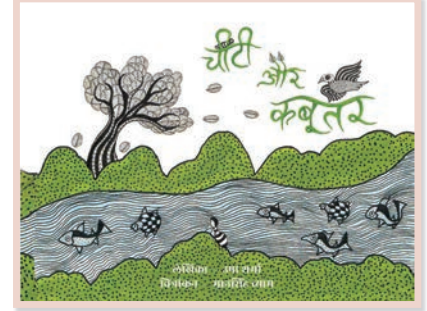
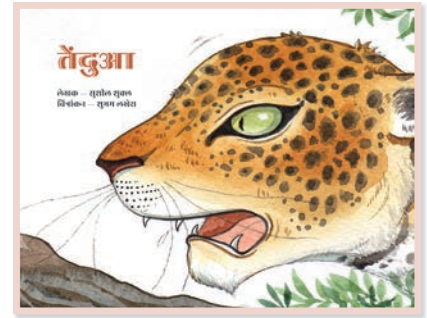
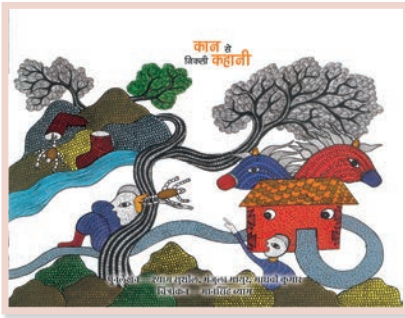


5. मेरी कलाकारी

मगरमच्छ का चित्र बनाइए और उसमें रंग भरिए—



और भी हैं मजेदार कहानियाँ...



असंख्य वृत्तांत प्राप्त करने
के लिए स्कैन एवं डाउनलोड करें
राष्ट्रीय ई-पुस्तकालय –
आपका डिजिटल पुस्तकालय!



21209

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-93-5292-922-1